Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

गुजरात के आदिवासी सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण के अग्रदूत श्री ठक्कर बापा

(पंचमहाल जिल्ले के विशेष संदर्भ में)

Parashar Shalu Mahesh Kumar
Ph.D. Parsing, Gujarat University, Ahmedabad
Email : shalu2794@gmail.com
Guide : Dr. Vijyaben Yadav

Abstract:

'ठक्कर बापा' अद्भुत व्यक्तित्व के स्वामी थे। लोगों का कहना था कि वे अपने आप में एक संस्था थे। वे जिस युग में थे, वहाँ समाज के दुर्बल अंग की उपेक्षा की जा रही थी; तब बापा ने दलितों और पिछड़े वर्ग को साथ लेकर प्रगति का रास्ता पकड़ा। उनकी अडिग लोक-सेवा ने हर दीन-दुःखी और गरीब को सम्मान दिया और उन्हें सबका बापा बना दिया। राष्ट्रपिता बापू भी उन्हें बापा ही कहा करते थे। अपने जीवन के अंतिम क्षण तक जिस अपूर्व निष्ठा, अनन्य भक्ति व अथक परिश्रम से उन्होंने अपना सेवा-व्रत निभाया, वह निस्संदेह बेजोड़ कहा जा सकता है। बापा विनम्रता और सरलता की मूरत थे; जब काका कालेलकर ने उनसे लेखन के लिए कहा तो वे बोले, "मेरे जीवन में ऐसा कुछ नहीं है, जो लिखने लायक हो।" उन्हें भाषण देना नहीं आता था और न ही वे साहित्यिक भाषा में लेख लिखते थे, बस उन्हें डायरी लिखने का शौक था। मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानकर शोषित-उपेक्षितों के कल्याण और सुख के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करनेवाले सेवाव्रती कर्मयोगी ठक्कर बापा की प्रेरक-पठनीय जीवनी है यह पुस्तक।

ठक्करबापा त्याग, सेवा, बलिदान तथा करुणा के साक्षात् पर्याय थे । उनका सम्पूर्ण जीवन पीड़ित मानवता की सेवा के लिए ही समर्पित था । अपने सेवाभाव के कारण वे उन सन्तों की श्रेणियों में आ गये, जिन्होंने मानव कल्याण के लिए जीवन ग्रहण किया था । 81 वर्ष की अवस्था तक भी कार्य करते हुए 19 जनवरी, 1951 को इस महान् इंसान ने अपना शरीर ईश्वर को समर्पित किया।

Key Words: आदिवासी महिलाएं, आदिवासियों का अतीत, महिलाओ की समस्याए, ठक्करबापा

प्रास्ताविकः

सन् 1857 के संग्राम के पश्चात् भारत में राजकिय चेतना के साथ राष्ट्रीयता की भावना का भी प्रारंभ हुआ था । सन् 1885 में हिंदी राष्ट्रीय महासभा की स्थापना के बाद गुजरात में प्राजकीय समस्याओं के लिये लोग संगठनों के माध्यम से लोगजागृति का उमदा वातावरण पैदा हुआ था । व्यापारी राज्य के रूप में पहचान रखने वाले गुजरात में राजकीय चेतना और राष्ट्रवाद की भावना पूरे गुजरात में एकी समय, एकी तराह (Pattern) पर पैदा नहीं हुई थी । क्योंकि गुजरात उस समय राजकीय - वहीवट दृष्टिकोण से (1) ब्रिटिश हस्तकवाला गुजरात जिस में अहमदाबाद, खेड़ा, भरूच, सूरत और पंचमहाल का समावेश होता है । (2) देशी रियासतो के अंतर्गत गुजरात, जो काफी बड़ा विस्तार था । इसके अलावा मैदानी गुजरात और पहाड़ी या वन्य गुजरात जैसे विभाग भी यहाँ प्रचलित थे। इसके परिणाम स्वरूप सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण के संदर्भ में समग्र गुजरात ने एक समान और एक पक्षीय

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

(Monalithic) प्रतिसाद दिया ऐसा कहना ऐतिहासिक सामान्यीकरण (Historical Generalization) करने बराबर है । गुजरात की भौगोलिक और सामाजिक विशेषताओं को मद्देनजर रखते हुए गुजरात में सामाजिक और सांस्कृतिक नवजागरण की तरह (Pattern) समान रही न थी । उदा. के तौर पर अहमदाबाद और सुरत जैसे शहरों में यह प्रक्रिया 17वीं शताब्दीं के मध्यभाग में शुरू हो चूकी थी । हालांकि गुजरात के पूर्व और दक्षिण विस्तार के आदिवासियों में मुख्य धारा की (Main Stream) कहीं जाने वाली यह प्रक्रिया गांधीयुग के दौरान हुई थी । इस शोधपत्र में गुजरात के पंचमहाल जिले के आदिवासियों में सामाजिक और सांस्कृतिक नवजागरण प्रकटाने में क्षी ठक्करबापा के योगदान के बारें में चर्चा की गई है ।

सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण एक व्यापक एवं विस्तृत संज्ञा है । वह एक दिन या जल्दी से होने वाली प्रक्रिया नहीं है । सामान्य तौर से सामाजिक-धार्मिक रूढ़ीचुस्तता और राष्ट्र की पराधीन अवस्था में यह प्रक्रिया का आरंभ होता है । अनेकविध क्रिया प्रतिक्रियाओं के परिणाम स्वरूप सामाजिक-सांस्कृतिक नवजारण निष्पन्न होता हैं । इसमें भी आदिवासियों जैसे पिछड़े समुदायों में यह प्रक्रिया दिर्घकालीन और जटिल हो सकती है ।

भारतीय शहरों और भद्र वर्ग की तरह ही आदिवासियों की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना भी सीधे-सीधे तरीके से निष्पन्न नहीं हुई थी । आदिवासियों में सामाजिक - सांस्कृतिक नवजारण और उनका राष्ट्रीय आंदोलन में विनियोग यह प्रक्रिया अलग-अलग मार्गो से पैदा हुई थी । उदा. के तौर पर अकाल राहत, संकट निवारण कार्य, शिक्षा, तबीबी प्रवृत्ति और समाज सुधार प्रवृतियाँ पंचमहाल जिले में यह प्रवृत्तियाँ सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण की पृष्ठभूमि बनी थी । ठक्करबापा सही मायने में आदिवासियों के हमदर्द थे । उन्होंने आदिवासियों की तत्कालीन समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए भील सेवा मंडल (1922) जैसी महान आदिवासी संस्थाओं की नींव रखी थी । बाद में भील सेवा मंडल और ठक्करबापा एकमेक के सहायक बनकर आदिवासी सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण के अग्रदूत बने थे ।

ठक्करबापाः परिचयः

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

गुजरात, भारत के सेवाकीय इतिहास में काफी बड़ा नाम है । किन्तु गाँधी पूर्व उन्होंने समाज के वंचितो में सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण के लिए जो योगदान दिया उसके बारे में पर्याप्त चर्चा नहीं हुई है । उनका जीवन परिचय लेते है ।

उनका मूल नाम अमृतलाल था । 29 नवम्बर, 1869 के दिन उनका जन्म भावनगर में लोहाना परिवार में हुआ था । उनका शैशवकाल बहुत ही धार्मिक और संस्कारी वातावरण में पसार हुआ था । माता का नाम मूलीबा और पिता का नाम विठ्ठलजी था । उनके परिवार में छ भाई और एक बहन थी । ठक्करबापा का विवाह 12 साल की उम्र में ही हो गया था । पिता ने बच्चों को पत्नी के गहने गिरवी रखकर भी उच्च शिक्षा दीलवाई थी । ठक्करबापा मेट्रीक की परिक्षा में समग्र भावनगर में प्रथम आये थे । सन् 1887 से 1890 के दौरान पूना से लाइसन्स ऑफ सिविल इंजीनियरिंग की परिक्षा पास कर इंजीनियरिंग हुये थे । 1891-1899 के दौरान सोलापुर, बढवाण, गोंडल, सांगली, पोरबंदर आदि जगहों पर इंजीनियरिंग की थी । 1899 से 1902 के दौरान पूर्व अफ्रिका के युगान्डा में तीन साल तक इंजीनियर के तौर पर काम किया था । जनवरी 1914 में इंजीनियरिंग पद से इस्तीफा देकर गोपाल कृष्ण गोखले प्रेरित हिन्दी सेवक समाज में जुड़े थे । इस संस्था का उद्देश्य भारत की सेवा करने हेतु राष्ट्रीय मिशनरी तैयार करना था । घोड़ो केशव कर्वे (1858-1962), देवधरदादा (1871-1935), विठ्ठल रामजी शिंदे (1873-1944) आदि उनके गुरू थे ।

सन् 1917 में पहली गुजरात राजकीय परिषद् में वो पहली बार पंचमहाल आये थे । 1991 में पंचमहाल - दाहोद में व्यापक अकाल राहत कार्य द्वारा उन्होंने आदिवासियों की परिस्थिति की जानकारी पाई थी । आदिवासियों की कंगाल स्थिति देखकर उन्होंने दिसम्बर 1922 में दाहोद में भील सेवा मंडल नामक संस्था की स्थापना की थी । भील सेवा के ही उद्देश्य से गुजरात के अलावा राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, आसाम, ओरिस्सा और सिंधके थरपारकर के रण में भी आदिवासी प्रवृत्तिओं को विस्तार किया था ।

ठक्करबापा सही मायने में आदिवासी कर्मशील थे । उन्होंने आदिवासी ईलाकों में क्षेत्रकार्य कर उनके प्रवक्ता की तरह विचारप्रेरक चर्चापत्र लिखें थे । उनके लेख 'नवजीवन और सत्य', 'नवजीवन', 'समालोचक', 'जन्मभूमि - प्रवासी' जैसी गुजराती पत्रिकाओं के अलावा 'यंग इन्डिया'जैसी अंग्रेजी पत्रिका में भी प्रकाशित हुये थे । इसके द्वारा ठक्करबापा ने आदिवासी समस्याओं को समकालीन जगत समक्ष रखकर आदिवासीओं के समर्थन में हकारात्मक लोकमत तैयार किया था । उनके लेखों

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

में आदिवासियों के प्रति समसंवेदन और गहरी हमदर्दी दिखाई पड़ती है । ऐसे महान आदिवासी कर्मशील, आदिवासी, अस्मिता के उदगाता श्री ठक्करबापा का 19 जनवरी, 1951 के दिन भावनगर में रात को 8:30 बजे देहांत हुआ
था ।

ठक्करबापा और आदिवासी सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरणः-

ठक्करबापा मूलभूत तौर से एक सामाजिक कर्मशील थे । उनका प्रयास भील सेवा मंडल के माध्यम से आदिवासियों का उत्कर्ष करना था । आदिवासियों का राजकीयकरण करना नहीं । अपनी व्यक्तिगत और हिंदी सेवक समाज की विचारधारा को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने आदिवासियों में बिनराजकीय प्रवृत्तियों को ही लक्ष्य बनाया था । उदा. के तौर पर अकाल राहत, शिक्षा, समाज, सुधार, संकट, निवारण, व्यसन मुक्ति आदि । इस हेतु को बर लाने के लिए ठक्करबापा ने आदिवासियों की सांप्रत परिस्थिति के उपरांत उनकी परंपराए और इतिहास का कुशलता से उपयोग किया गया था । उनके आदिवासी सांस्कृतिक नवजागरण के बारे में उमदा विचार नीचे दिये गये परिच्छेद में देख सकते हैः "भील कोम को सहाय देना, उनको उपर उठाने के लिए हाथ देना यह उच्च कहलाने वाली जातियों की जिम्मेदारी है । भील लोग लाखों की तादात में होने के बावजुद उनको अपनी तादात का, अपने अतीत के गौरव का और वर्तमान में वो कितना ऊँचा उठ सकते हैं यह ऊँचाई का ख्याल नहीं है । भील अंधकार में डुबे हैं, उनको तमस में से ज्योति की तरफ ले जाना है । वो अज्ञान में डूबे हुए है, उनको धार्मिक और भौतिक ज्ञान देकर हमारी समकक्ष लाना है ....., हमारे देश को स्वराज पाना हो तो, अपने देश को परतंत्रता से निकाल कर स्वतंत्रता का अमृत पीना हो तो दुसरी जातिओं को परतंत्र, अज्ञान और दरीद्र रखकर नहीं कर सकते ।"

ठक्करबापा ने आदिवासी उत्कर्ष हेतु समर्पित कार्यकर्ता और संस्था की आवश्यकता देखी
थी । इस समय उनके सामने रोल मोडेल के तौर पर इसाई मिशन थे । पंचमहाल जिले में विविध उद्देश्य से मुक्ति फौज, आई.पी. मिशन जैसे मिशन कार्यरत थे । उनकी शिक्षा, तबीबी प्रवृत्तियाँ आदिवासीयों में प्रभाव बढ़ा रही थी । यह सब देखकर ठक्करबापा ने लिखा कि..... "मिशनरी हजारों माईल दुर से आकर भील जैसे दुःखी, निरक्षर और शोषित भाईयों की सेवा करते है तो हम तो इसी देश के रहने वाले है, हम ऐसा काम क्यों नहीं कर सकते ?"

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

ठक्करबापा के इस बयान में इसाई मिशन प्रवृत्तिओं का प्रतिकार नहीं किंतु उनसे सिखने की उम्मीद दिखती है, उन्होंने आगे लिखा है कि "जिनके पास में से लोगों कि सेवा का पाठ सिखा हुँ ऐसे तत्वो में हिंदुस्तान में इसाई मिशनों को रखता हूँ ।"

ठक्करबापा सिर्फ इसाई मिशनों की टिका करके रूक नहीं गये थे । उन्होंने आदिवासीओं के लिए विकल्पों की तलाश शुरू की थी । उनकी यह प्रवृत्ति कुछ हद तक बंगाल में नवजागरण में राजा राममोहन राय द्वारा अपनाई गई प्रवृत्ति की याद दिलाती है । उन्होंने अपने हिंदु बंधुओं को ललकारते हुए कहा कि "कोई इसाई मिशन उनके बीच रहकर उनको संस्कृति देनेका और उन्नति देने का, अपनी मान्यता के हिसाब से प्रयत्न करता है ....., पर हम तो उनको अस्पृश्यों की तरह दुर रखते हैं उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करते है, धर्मज्ञान से वंचित रखते है, बंधुभाव से अपनी नजदीक रखकर उनके सुख-दुख में भागीदार बनकर उनके अंतर में निवास कर, अपने जैसे बनाने की और ईश्वर के सांनिध्य में ले जाने की बात तो कहाँ से हो सकती है । जब प्रेमपंथ पावक की ज्वाला हम में से निकलेगी और इसाई मिशनरीओं की तरह आयुष्यभर उनकी सेवा करने वाले व्रतधारी बनेंगे तब ही हम आदिवासिओं के कर्ज में से मुक्त हो सकेंगे ।"

ठक्करबापा अपने समकालीनों से काफी अलग तरीके के विचारक और कर्मशील थे । आदिवासी उत्थान हेतु उन्होंने जो कार्यकर्ताओं की अपेक्षा रखी थी उनको देखते हैः..... "जो लोग दिन-रात भीलों की सेवा करने की ईच्छा रखते हैं, भीलों की सेवा को ही अपना पहला और अंतिम कर्तव्य मानते हो, संक्षेप में, इसाई धर्म के प्रसार हेतु पादरी और मुक्ति फौजवाले जिस जुस्से और दृढ़ निश्चय से सेवा करने वाले व्रतधारी मिशनरीओं से भील सेवा मंडल बना है ।"

संक्षेप में, देखे तो ठक्करबापा ने आदिवासी प्रवृत्ति हेतु मिशाल के तौर पर इसाई मिशनों को रखाथा ।

इसी पद्धति पर उन्होंने उस समय पंचमहाल के आदिवासीओं में लोकप्रिय रहा भगत आंदोलन (1905-1931) और श्री गोविंद गुरू (1874-1931) का सहयोग प्राप्त किया था । यहाँ के भील नई राष्ट्रीय प्रवृत्तिओं के साथ तादात्म्य कर सके इसके लिए दाहोद में आयोजित मिटिंग में गोविंद गुरू की सहायता ली थी । 1921 में आयोजित इस सभा में विशाल पायमाने में आदिवासी उपस्थित रहे थे । उन्होंने भगत आंदोलन और भील सेवा मंडल का कुशलता से संयोजन किया था । इस बारे में खुद

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

ठक्करबापा ने लिखा है "भगत भील समजु और होशियार होते है, वह नई राष्ट्रीय प्रवृत्तिओं का तुरंत स्वागत करते है और स्वयंसेवकों के साथ मिलकर उनके कार्य में काफी मदद करते हैं । पाठशाला और आश्रमशालाओं में बच्चे भेजने में, घर में चरखा दाखिल करने में, सहकारी मंडली या चिकित्सालय का लाभ लेने में, सभी सार्वजनिक कामों में शुरूआत भगतों को ही होती है । जिस गाँव में कुछ अच्छी स्थिति का भगत होता है वहाँ आगेवान भी वो ही होता है । भील मुल्क के गहरे अंधकार में भगत भील ही तेज किरणों के समान है ।" इसी बुनियाद पर भगत भीलों ने ढ़ाँचागत सुविधाएँ पैदा करने में ठक्करबापा और भील सेवा मंडल को काफी मदद की थी ।

इस तरह ठक्करबापा ने इसाई मिशन के खिलाफ आदिवासीओं को वैकल्पिक व्यवस्था प्रदान कर और स्वयंभू भगत आंदोलन की मदद लेकर पंचमहाल में आदाविसीओं में शिक्षा, समाज सुधार आदि माध्यमों से आदिवासी की मुख्य धारा के संदर्भ में सामाजिक सांस्कृतिक नवजागरण की बुनियाद रखी थी ।

उपरोक्त विवरण का कतई मतलब नहीं है कि इसके बाद स्थानिक आदिवासीओं ने स्वातंत्र्य आंदोलन में झुका दिया था । ठक्करबापा और भील सेवा मंडल बिनराजकीय थे और उन्होंने राजकीय प्रवृत्तिओं को बचा के रखा था, क्योंकि भील सेवा मंडल के संविधान में खुद ठक्करबापा ने लिखा था कि इस मंडल को राजकीय प्रवृत्तिओं से अलग रखेंगे । किन्तु ठक्करबापा 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में मंडल का राजकीय होने से बचा नहीं सकते थे । इस मुद्दे पर भील सेवा मंडल के और कार्यकर्ताओं के साथ उनको वैचारिक मतभेद भी हुआ था । इस समय ठक्करबापा ने कहा था कि "भील सेवा का व्रत जिसने लिया है उनको स्वतंत्रता आंदोलन में नहीं जाना चाहिये । आंदोलन गलत नहीं है, इसमें सबको जाना चाहिए उनका धर्म है, यह सही, किन्तु जिन लोगों ने एक विशिष्ट कार्य अपने हाथ में लिया है उसको आधा या खुला छोड़कर नहीं जाना चाहिए, ठक्करबापा के इस मत के सामने आंदोलन में जुड़ने इच्छुक कार्यकर्ताओं की दलील थी कि इस समय पुरा देश जल रहा है और देश की स्वतंत्रता की खातिर सर्वस्व छोड़ने के लिए गंधीजी हाकल कर रहे हैं तब संस्था को पकड़कर हम बैठ नहीं सकते । उन कार्यकरों की सबसे बड़ी दलील तो यह थी की साबरमती आश्रम से बड़ी कोईसंस्था नहीं है ना ? वहाँ से 80 आश्रमवासीओं को लेकर गांधीजी आज ब्रिटिश सल्तनत के सामने मैदान में आये है और अपना सर्वस्व डुल करने के लिए भी तैयार हुए हैं, तब हम कौन होते है ? स्वराज आयेगा तब तो अनेक संस्थाएँ स्थापित होगी, परंतु हमारे दोष से स्वराज पीछे जायेगा तो ऐसी संस्थाएँ भी टिक

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

नहीं पायेगी । इस वादविवाद के बाद ठक्करबापा की परवानगी के बाद ही कुछ भील सेवक सविनय अवज्ञा आंदोलन से जुड़े थे, जिसमें रूपाजी परमार नामक आदिवासी कार्यकर्ता भी थे । समय के साथ और आदिवासी सेवक भी जुड़ते गये थे । जिसमें लालचंद नीनामा, हीराबेन नीनामा, जयसिंह सोलंकी, वीरसिंह नीरसता, टीटाभाई हठीला, ज्योतिभाई भाभोर, चतुरभाई डांगी आदि का समावेश होता था । आजादी के आते आते तो भील सेवा मंडल और स्वतंत्रता आंदोलन परस्पर पर्याय बन चूके थे । आजादी बादतो सालों तक पंचमहाल का नेतृत्व इन भील सेवकों के हाथ में रहा था । पंचमहाल के 80 प्रतिशत नेता भील सेवा मंडल की नीपज थे। इस तरह ठक्करबापा प्रेरीत सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण आदिवासीओं की स्वराज्य यज्ञ में भागीदारी तक आगे बढ़ा था ।"

समापनः उपर हमने देखा की ठक्करबापा ने बिन राजकीय प्रवृत्तिओं द्वारा आदिवासी जैसे पिछड़े समूदायों में सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण जगाया था । ठक्करबापा ने अपने प्रवृत्तियाँ आरम्भ की तब दाहोद प्रदेश लगभग 'डार्क झोन' से जाना जाता था । आदिवासी जीवन समाज की मुख्य धारा से बिलकुल अलग था । जहाँ बाहरी लोगों के लिये जगह बनाना इतना आसान नहीं था । इस विषम परिस्थिति में ठक्करबापा ने अकाल राहत, शिक्षा, समाज सुधार जैसी बिनराजकीय प्रवृत्तिओं का सहारा लेकर आदिवासिओं को सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण लाने में कुशलता से प्रयोग किया था । जिसने आदिवासिओं को सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण के साथ राष्ट्रीय आंदोलन और राष्ट्रनिर्माण में उनकी भागीदारी बढ़ाई थी । ठक्करबापा की इस भूमिका के बदले में आज के आदिवासी कहते है कि यदि ठक्करबापा नहीं होते तो यहाँ का आदिवासी आज भी जंगलों में भटकता होता । इतना ही नहीं ठक्करबापा की आदीवासी प्रवृत्तिओं की बुनियाद पर ही समग्र देश की आदीवासी नीति गुजरात से तय होती थी । ए.,वी. ठक्कर नामक कर्मशील को आदिवासीओं ने ठक्करबापा बनाय था।

संदर्भिका

1. विस्तृत जानकारी के लिए देखिएः विद्या (त्रैमासिक, जर्नल ऑफ गुजरात युनि., अहमदाबाद), जान्यु. - ऑगस्ट-1984, अंकः 1-2, वोल्युम-29 (मानव विद्या) में मकरन्द मेहता का लेख 'गुजरात में राष्ट्रवादनो उमंगः अहमदाबादी शैलीनुं विश्लेषण.'
2. अरूण वाघेला, भील सेवा मंडल, अहमदाबाद, 2010, अध्याय-2

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

3. अरूण वाघेला, पंचमहालना आदिवासीओनी विकास यात्रा, गोधरा, 2009, पृ.10-11.
4. जयकुमार शुक्ल, गुजरातमां होमरूल आंदोलन, अहमदाबाद, 2005, पृ.37.
5. अरूण वाघेला, पंचमहालना आदिवासीओनी विकास यात्रा, अध्याय 3.5.
6. G.W. Blair, Station and Camp life in the Bheel Country, belfest, 1905, P.32 and James Compbell, (Ed.) Gazetteer of the Bombay Presidency, Vol. III (Kaira and Panchmahal), Bombay, 1879. P.277 और नाथजी महेश्वर पाठक, भीलोना गीतो, अहमदाबाद, 1915, प्रस्तावना.
7. B.G. Vol. III, P.280-85 और जयंतिलाल मलकान, पंचमहालना आदिवासीओं, अहमदाबाद, 1955, पृ.8.
8. ठक्करबापा के जीवन और कार्य के लिये देखियेः कान्तिलाल शाह, ठक्करबापा, दिल्ली, 1955. गुजराती भाषा में ठक्करबापा के आठ जीवनीयाँ लिखी गई है । हिन्दी में उनका जीवनचरित्र श्री वियोगी हरिने लिखा है । वियोगी हरी, ठक्करबापा, दिल्ली (आधुनिक भारत के निर्माता श्रेणी), 1969.
9. भील सेवा मंडल, वार्षिक अहेवाल, संवत् 1980, दाहोद, पृ.1-2.
10. भील सेवा मंडल की रूपरेखा, दाहोद, 1970, पृ.106.
11. कान्तिलाल शाह, उपर्युक्त, पृ.394.
12. युगधर्म (मासिक), ज्येष्ठ 1979, पुस्तक-2, अंक-3, पृ.243. 'एक दुःखी भीलनी कथा नामक लेख.'
13. भील सेवा मंडल, वार्षिक अहेवाल, दाहोद, 1925, प्रस्तावना.
14. युगधर्म, ज्येष्ठ 1980, पृ.4, अंक-3, अहमदाबाद, पृ.177.
15. नवजीवन (साप्ताहिक), अहमदाबाद, 16 जुलाई, 1922, पृ.3, अंक-43, पृ.363.
16. कान्तिलाल शाह, उपर्युक्त, पृ.226.
17. अरूण वाघेला, भील सेवा मंडल, पृ.103.